International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 12-12-2019; Accepted: 13-01-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 1; 2020; Page No. 54-56

शहडोल जिले के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं के संचालन का अध्ययन

राकेश कुमार त्रिपाठी
शोधार्थी शिक्षा, श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मेडिकल साइंसेस सिहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र शहडोल जिले के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं के संचालन का अध्ययन पर आधारित है। न्यादर्श में चयनित जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी –2 ग्रामीण (एक बालक एवं एक बालिका) आवासीय विद्यालय कुल 20 विद्यालयों प्रधानाध्यापक, 2–2 शिक्षक कुल 40 शिक्षक, 2–2 अभिभावक, कुल 40 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के 95.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 77.50 प्रतिशत शिक्षक, 65.00 प्रतिशत व 69.12 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।

मूल शब्द: शहडोल जिला, आवासीय विद्यालय, योजनाएँ, अनुसूचित जाति, जनजाति।

1. प्रस्तावना
शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान करता है, जीवन को आनन्दमय बनाता है तथा जनकल्याण के कार्यों में प्रवृत्त होता है।

शैक्षिक विविधता, पाठ्यक्रम विषयवस्तु विद्यालय का वातावरण, अध्यापक का व्यवहार, शिक्षण विधि आदि बालक के शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव डालते है। जब बालक का शैक्षिक समायोजन अच्छे ढंग से नहीं होता है। तब बालक के अन्दर अप्रसन्ता, भय, क्रोध, ईर्ष्या, लज्जा, संदेह, क्रूरता, चोरी करना, कक्षा से भाग जाना, वस्तुओं की तोड़फोड़ करना, अविश्वास, धोखा देना तथा अनुशासनहीनता आदि लक्षण दिखलायी देने लगते है। जिससे उसका शैक्षिक जीवन डगमगाने लगता हैं तथा बालक कुसमायोजित हो जाता है।

समायोजन में विद्यालय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालय में ही बालक के अन्दर तर्क, कल्पना चिन्तन तथा निर्णय शक्ति का विकास होता है। जिससे बालक स्वतंत्र, स्पष्ट व तार्किक रूप से चिन्तन कर सके तथा बालक विद्यालय के वातावरण से अपने को समायोजित कर सके। विद्यालय समायोजन में अध्यापक की भूमिका बालक को अधिक प्रभावित करता है। अध्यापक बालक की समस्या का निदान करके उपचार कर सकता है। विद्यालय में चरित्रवान, बाल मनोविज्ञान से परिचित अच्छे अध्यापकों का होना अनिवार्य है। जो बालक की समस्याओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से हल कर सके। बालकों की क्या आवश्यकताएँ हैं? उनकी क्या रूचियाँ है। इन सबकी जानकारी शिक्षक को होना चाहिए। पाठशाला में प्रत्येक बालक को उनकी रूचि तथा योग्यता के अनुसार शिक्षा देनी चाहिए। उन्हें काम करके सीखने के लिए अधिक प्रोत्साहित करना चाहिए। अध्यापक का व्यवहार पक्षपात पूर्ण नहीं होना चाहिए। अध्यापक घर तथा विद्यालय के बीच एक कड़ी का काम करता है। अध्यापक बालक की पारिवारिक समस्या की जानकारी प्राप्त करके उनके माता–पिता के समक्ष रखता है। माता–पिता तथा अध्यापक बालक के समायोजन योग्यता को सबल बनाते है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल शहडोल जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं के संचालन की वास्तविकता तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं व शासकीय प्रयासों व प्रभावों को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

इस अध्ययन के द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से अल्प विकसित शहडोल जिले के आवासीय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य
किसी भी शैक्षिक शोध के कुछ निश्चित बिन्दु होते हैं। जिनको प्राप्त करने की दिशा मे शोध उन्मुख होता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि आवासीय विद्यालय के अंतर्गत संचालित योजनाओं का कितना तथा किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है। प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि योजनाओं का आवासीय विद्यालयों में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के नामांकन, उपस्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा है?
- योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों एवं समस्याओं का आंकलन कर उन्हें दूर करने हेतु उपाय सुझाया जा सकेगा।

4. शोध की परिकल्पनाएँ
वैज्ञानिक शोध कार्यों में परिकल्पनाओं का विशे ा महत्व होता है। शोध का प्रारूप परिकल्पनाओं पर ही आधारित होता है। इसका प्रतिपादन दो प्रकार से किया जाता है– दिशायुक्त परिकल्पना तथा दिशाविहीन परिकल्पना।

यदि दिशायुक्त परिकल्पनाओं को उल्लेख करना है तब उनका सैद्धांतिक आधार अंकित करना चाहिये। इसीलिये आजकल दिशाविहीन परिकल्पनाओं का उल्लेख करते हैं क्योंकि इनके सैद्धांतिक आधार की आवश्यकता नहीं होती है। समस्या के समाधान के सम्भावित रूप को परिकल्पना कहते हैं

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नवत तथ्य प्राप्त होगे–

"शोध क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन
शोध कार्य का क्षेत्र जिला शहडोल है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड – सोहागपुर, गोहपारू, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के समायोजन के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि, इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्श
चूंकि शहडोल जिला का क्षेत्र व्यापक है, सभी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी –2 ग्रामीण (एक बालक एवं एक बालिका) आवासीय विद्यालय कुल 20 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से

ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के आवासीय विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी आवासीय विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हो।

विद्यालयों में अध्ययनरत आवासीय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं के संचालन का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श में चयनित जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी –2 ग्रामीण (एक बालक एवं एक बालिका) आवासीय विद्यालय कुल 20 विद्यालयों प्रधानाध्यापक, 2–2 शिक्षक कुल 40 शिक्षक, 2–2 अभिभावक, कुल 40 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृ ट्यों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि:** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि:** साक्षात्कार शैक्षिक अथवा मनोवैज्ञानिक स्तर पर सम्पन्न की गयी वह प्रक्रिया होती है, जिसमें दो अपरिचित एक दूसरे के निकट आते हैं। गुड तथा हैट ने लिखा है कि, विश्वसनीयता एवं विस्तार तब तक नहीं हो सकता है, जब तक मस्तिष्क में यह स्पष्ट नहीं हो कि साक्षात्कार अनुसंधान की कोई पृथक प्रणाली नहीं है, अपितु आँकड़े प्राप्त करने का एक प्रभावपूर्ण उपकरण है, जो अन्य उपकरणों का पूरक है। यह व्यक्तियों के सम्बन्ध में ज्ञान और अनुभव की वृद्धि करता है, जिसका संकलन साक्षात्कार के अतिरिक्त अन्य प्रणालियों द्वारा किया गया है।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन से संबंधित प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों से साक्षात्कार व प्रश्नावली पत्रक द्वारा किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, रीना (2007)[1], गर्ग, चित्रा, (1992)[2], गुप्ता एस.पी. (2001)[3], मेहता, सी. (1970)[4], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[5] त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[6], श्रीवास्तव तथा डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016)[7] तथा केरकट्ट, बुद्धिमान, (2012)[8] ने शोध विधि एवं आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के समायोजन के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शहडोल जिले का सामान्य परिचय

शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^0$38′ उत्तरी अक्षांश से $24^0$20′ उत्तरी अक्षांश एवं $30^0$28′ पूर्वी देशांतर से $82^0$12′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंह नगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंह नगर हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: "शोध क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श के रूप में चयनित	न्यादर्श में चयनित विद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित संख्या	शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन			
				हो रहा है		नही हो रहा है	
				संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	20	20	19	95.00	1	5.00
2.	शिक्षक	20	40	31	77.50	9	22.50
3.	अभिभावक	20	40	26	65.00	14	35.00
4.	छात्र	20	800	553	69.12	247	30.88
योग		80	900	629	69.89	271	30.11

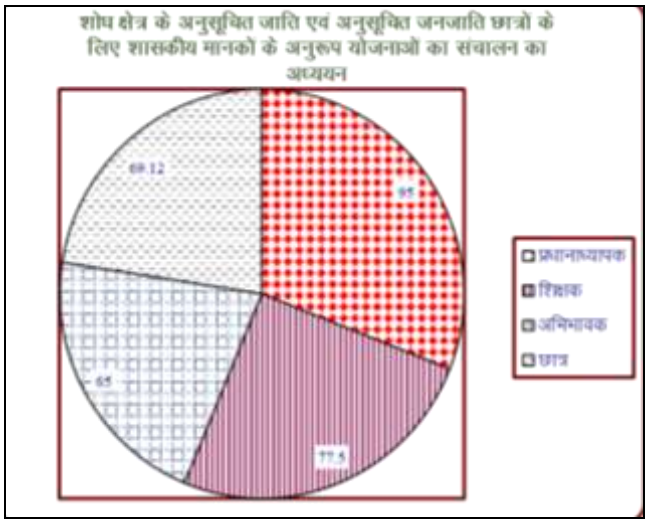

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 95.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 77.50 प्रतिशत शिक्षक, 65.00 प्रतिशत व 69.12 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है और वही पर 35.00 प्रतिशत अभिभावक, 30. 88 प्रतिशत छात्र, 22.50 प्रतिशत शिक्षक व 5.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का अभिमत हैं, कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन नही हो रहा है।

अतः शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित 69.89 प्रतिशत अभिमतानुसार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्ननुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के 95.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।
2. शोध क्षेत्र के 77.50 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।
3. शोध क्षेत्र के 65.00 प्रतिशत यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।
4. शोध क्षेत्र के 69.12 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्रों के लिए शासकीय मानकों के अनुरूप योजनाओं का संचालन हो रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
2. गर्ग, चित्रा, ''दसवीं कक्षा में अनुर्तीण विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बनध सामाजिक, आर्थिक स्तर, बौद्धिकता तथा समायोजन का अध्ययन, आगरा, 1992.
3. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
4. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
5. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
6. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016) "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research, Volume 1; Issue 9; November 2016; Page No. 05-07.
7. श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016) – "माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के संन्दर्भ में)" International Journal of Multidisciplinary Education and Research, Volume 1; Issue 3; May 2016; Page No. 63-65.
8. केरकट्ट, बुद्धिमान, 2012, ''पश्चिम ओडिशा संभाग में केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के छात्रों की संस्कृत के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति, आन्ध्रप्रदेश।